Indian Streams Reserach Journal
Vol.2,Issue.II/March; 12pp.1-4
शौकतअली अजमुद्दीन सय्यद
ISSN:-2230-7850

Research Papers

चंद्रसेन 'विराट' की ग़ज़लों में व्यक्त जीवन–बोध

प्रा.शौकतअली अजमुद्दीन सय्यद
असो. प्रोफेसर एवं हिंदी विभागाध्यक्ष,
आर्टस, कॉमर्स कॉलेज मायणी
तह. खटाव, जिला –सातारा
महाराष्ट्र.

प्रस्तावना :–

ग़ज़लकार चंद्रसेन 'विराट' साठोत्तरी युग के एक समर्थ ग़ज़लकार है। इनका जन्म 3 दिसंबर ई. स. 1936 में इंदौर नगर के निकट बलवाडा ग्राम में हुआ। विराट आम आदमी के रचनाकार है। इन्होंने समकालीन यथार्थ की अभिव्यक्ति के लिए सशक्त माध्यम के रुप में ग़ज़ल–विधा को अपनाया है। इनकी ग़ज़लों में कथ्य की व्यापकता परिलक्षित होती है। व्यक्ती–जीवन तथा समाज–जीवन का एक अत्यंत व्यापक चिंतन इनकी ग़ज़लों में दृष्टिगोचर होता है। इनका ग़ज़ल–काव्य मानव जीवन–बोध के प्रमुख तत्व–सामयिकता, मानवीयता, राष्ट्रीयता, धार्मिकता, नैतिकता तथा प्रगतिशील विचारों के प्रति समर्पित काव्य है। अतः मानव जीवन–बोध यही इनकी ग़ज़लों की महत्वपूर्ण उपलब्धी है।

हिंदी ग़ज़ल के स्थापित हस्ताक्षर, राष्ट्रीय ख्याती प्राप्त ग़ज़लकार चंद्रसेन 'विराट' ऐसे ग़ज़लकार है, जो हिंदी ग़ज़ल–काव्य के प्रति पूरी निष्ठा से आजीवन समर्पित रहें है । ग़ज़लकार दुष्यंत के बाद हिंदी ग़ज़लकारों के जो नाम लिये जाते है उनमें एक नाम 'विराट' जी का है। इनके अब तक दस ग़ज़ल–संग्रह प्रकाशित हो चुके है तथा कई सम्मान और पुरस्कारों से सम्मानित किये जा चुके है।

'विराट' जी ने अपनी हिंदी ग़ज़लों मे मानव जीवन को विविध कोणों से देखा है और उसके लिये आज के मानव जीवन की वास्तविक स्थिति पेश की है, जिनमें वर्तमान जीवन का सत्य मिलता है।

'विराट' जी की ग़ज़लों मे व्यक्त मानव जीवन–बोध के प्रमुख तत्व है– मानवीय संवेदना, प्रेम–बोध, नैतिक जीवन–बोध, धार्मिक जीवन–बोध, सांस्कृतिक–बोध, आदर्शवादी जीवन–बोध विविध रूप हमें देखने मिलते हैं–

(1) मानवीय संवेदना –

मानवीय संवेदना 'विराट' जी की ग़ज़लों की आत्मा है। हर ग़ज़ल में कही न कहीं मानव–प्रेम के दर्शन हो जाते है। कृत्रिमता से लिपटे–सिमटे आज के यंत्रवत मानव को आपसी भाईचारे और प्रेम का संदेश देते हुए 'विराट' लिखते है–

'' मिले तो मत मन मारे मिल
खुलकर बाह पसारे मिल
वर्ण, वर्ग, कुल, जाति धरम
भेद भुलाकर सारे मिल।'' 1

अतः स्पष्ट है वर्ण, वर्ग, कुल, जाति, धरम की दीवारें तोडकर इन्सानियत को अपनाने का, आत्मीयता से मिलने का उदात्त संदेश दिया गया है, यहॉ कवि की मानवीय संवेदना व्यक्त होती है। आज आम आदमी, आम नौकर की स्थिती बेहाल है। हक तथा अधिकार से वंचित है। एक ऐसे ही सैनिक के बारे बारे में कवि लिखते है–

'' तू सैनिक है, केवल जूझ
सुबह हुई या शाम न पूछ।''2

यहॉ उस सैनिक के प्रति 'विराट' जी की संवेदना रुपायित हुई जिसे अधिकारी से कुछ पूछने का अधिकार नहीं है। अतः मानवीय संवेदना 'विराट' की ग़ज़लों की आत्मा है, जो आज के संवेदाहीन मानव जीवन की अनिवार्य आवश्यकता है। 'विराट' जी का विचार है कि आज के लोग मशीन की तरह संवेदनाहीन बन गये है। इसलिए तो 'विराट' लिखते है –

'' वैसे बडे जहीन है मेरे शहर के लोग
तन से बडे हसीन है मेरे शहर के लोग
संवेदना नही है फक्त हाड–मांस के
जैसे कोई मशीन है मेरे शहर के लोग।''3

'विराट' की ग़ज़लों मे संवेदनाहीनता का व्यापक चित्रण चित्रित किया गया है। प्रकारांत से यह मानवीय संवेदना का प्रेरक है।

Please cite this Article as: *प्रा.शौकतअली अजमुद्दीन सय्यद,चंद्रसेन 'विराट' की ग़ज़लों में व्यक्त जीवन–बोध*: **Indian Streams Research Journal (March ; 2012)**

Indian Streams Reserach Journal
Vol.2,Issue.II/March; 12pp.1-4

(2) प्रेम–बोध

'विराट' अपनी ग़ज़लों व्दारा आपसी प्रेम को जगाने का संदेश देते है। उनका अपना विचार है कि जहाँ प्रेम होता है, वहाँ नैतिकता होती है। इसलिए तो कवि नैतिक जीवन मूल्यों का उपदेश देते हुए प्रेम तथा मानवीयता का महत्व समझाते है –

'' प्रेम ही है, प्राप्य सबका, प्रेम ही प्रतिपाद्य है
प्रेम ही आराधना है, प्रेम ही आराध्य है।''4

अतः स्पष्ट है 'विराट' जी के मतानुसार प्रेम का आचरण ही आज के समाज –जीवन का आधार है।

(3) नैतिक जीवन–बोध –

डॉ मोहिनी शर्मा ने कहा है कि '' भारतीय संस्कृति का चरम लक्ष्य सत्यं, शिवं, सुंदरं युक्त मानवीय विचारणा या चिंतन का निचोड ही जीवन–मूल्य कहलाता है।''5 अर्थात सत्य, कल्याण अहिंसा सद्भावना, सहिश्णुता आदि उदात्त मानवतावादी मूल्यों को अपनाना ही नैतिक जीवन–मूल्य है। 'विराट' जी की ग़ज़लों मे सत्य, शिव और सौंदर्य तत्व निहित रुप मे समाहित है, वे काव्य में शिव तत्व (मानव–कल्याण) की कामना करते हुए लिखते है–

'' काव्य न जिसमें अगर सम्मिलित
मन, प्रज्ञा का सत्व नहीं है,
काव्य नहीं, सौंदर्य सत्य में
यदि प्रस्यूत शिवत्व नहीं है।''6

युग की प्रतिहत प्रजा को, नई पीढी को नैतिक मूल्यों की उँचाई पर ले जाने के लिए विराट उदात्त मूल्येां को अपनाने की सलाह देते हैं। आकाश की उपलब्धि नाप लेने को कहते हैं–

'' हो गरुड न विचरों घाटी में
शिखरो की ओर उडान करो।''7

'विराट' जी की ग़ज़लों में नैतिक – मूल्येां का उचित परीक्षण एवं परिणाम है। 'विराट' नैतिकता की स्थापना के लिए सामाजिक एकता की आवश्यकता पर बल देते है। इन्सानियत, मानवीयता, व्यक्ति का समाजहित (कल्याण), अहिंसा, सद्भावना, सहिष्णुता के लिए एकता की बहुत आवश्यकता है। इसलिए वे इन्सानियत को जगाने का नैतिक उपदेश देते है–

'' एक ही स्वप्न सजायें काफी
एक ही राह बनाये काफी
जाग उट्ठेगी बस्तियाँ सारी
एक इन्सान जगाये काफी।''8

'विराट' जी की ग़ज़लों में मूल्य–हीनता का व्यापक चित्रण है। प्रकारांत से यह नैतिक मूल्य–चेतना का ही प्रेरक है। यथा –

'' ऐ जुल्मा खबरदार, कर्बला में इस दफा
नेजे पे तुझ से शीश उछाले न जाऍगे।''9

इस शेर में मानवीय संवेदना और मूल्य चेतना का अच्छा समन्वय है। कर्बला हो या काशी मनुष्य के साथ अत्याचार 'विराट' जी को किसी भी तरह स्वीकार नहीं है। उनकी मूल्य चेतना उनके नैतिक जीवन–बोध की रीढ है।

'विराट' जी ने सामाजिक विसंगतियों, भ्रष्टाचार, रिश्वतखोरी, आतंकवाद, धार्मांधता आदि का जो चित्रण किया है, उसमें नैतिक तत्वेां का अभाव ही दर्शाया है। 'विराट' जी के मतानुसार विवेक का चैतन्य रहना नैतिकता की प्रथम आवश्यकता है जिसे 'विराट' जी ने आदर्श मानव जीवन का अंग समझा है, एक शेर देखिए –

'' संवेदना मूर्च्छित हो, तब भी
हो विवेक चैतन्य बहुत है।''10

जो मानवतावादी नैतिक मूल्यों को अपनाएगा वह हर जगह अपेक्षित होगा । समाज में उसका यश निश्चित होगा । इसलिए कवि लिखते हैं –

'' सभ्य सुसंस्कृत शिक्षित होगा
वह हर जगह अपेक्षित होगा
यश के खुले बही–खाते में
उसका स्थान सुरक्षित होगा।''11

अतः मानवतावादी नैतिक मूल्यों की जीत निश्चित है, यही कवि का अपना विचार है।

(4) धार्मिक जीवन बोध –

'विराट' जी ने अपनी ग़ज़लों में उदात्त धार्मिक जीवन–बोध की अभिव्यक्ति की है। नैतिक संयम ही धर्म कहलाता है। डॉ. वी. डी. नुले ने कहा है कि ''विशिष्ट नैतिक संयम तथा विधि–विधानपूर्ण तत्व, जिससे मानव समाज स्थिर और संयुक्त रहें, धर्म कहलता है।''12 अतः स्पष्ट हे हमारी सामाजिक व्यवस्था में धर्म का अत्यंत महत्वपूर्ण स्थान हैं। मानव समाज में स्थिरता और एकता बनाये रखना धर्म का प्रयोजन होता है।

भारत मे विविध धर्म है । फिर भी भारत में विविधता में एकता है। अनेक धर्म–संप्रदाय के लेाग भाई–भाई की तरह रहते आये है, किंतु कुछ समाज कंटकों ने अपने लाभ के लिये लेागों मे नफरत की दीवर खडी कर दी, दंगे फसाद होने लगे। परिणामतः आज इस देश मे पुनः कबीरवाणी की आवश्यकता महसूस होने लगी है। इसलिए तो एकता की अभिलाशा व्यक्त करते हुए 'विराट' जी लिखते है –

'' जो न हो मैली धुऍ से उस किरण की खोज है
दृष्टि दूषित हो न जिसकी एस नयन की खोज है
भिन्न प्रांतो धर्म भाषा जातियों में एक था
है कहाँ मेरा वतन?मुझको वतन की खेाज है।''13

अतः 'विराट' जी ने धार्मिक सद्भाव की मनोकामना व्यक्त करते हुए भारत 'विविधता' मे एकतावाला वतन' बने इसी उदात्त धार्मिक जीवन–बोध को व्यक्त किया है।

'विराट' जी ने अनुभव किया है कि परंपरागत धर्म परस्पर लढने का काम करते है। इससे उन्होंने ईश्वर और धर्म को उनके परंपरागत रुप से आगे बढाकर जनहित के तत्वों मे लपेटकर प्रस्तुत किया है। 'विराट' जी ने अनेकता मे एकतावाले धर्म के उत्थान की आशा नही छोडी है, वे लिखते हैं–

'' भोग से ऊब मनुज लौटेगा
भक्ति की भावना निराश न हो।''14

यहाँ कवि 'विराट' उदात्त धर्म तत्वों की पुनः लौटने की आशा व्यक्त कर रहे हैं।

(5) सांस्कृतिक – बोध

'विराट' जी को श्रेष्ट संस्कार अपने परिवार से ही मिले इसलिए उन्होंने समाज में व्यक्त संस्कार हीनता का व्यापक चित्रण अपनी ग़ज़लें में व्यक्त किया है।

रुपसी के सहज, सलज्ज, सौंदर्यवर्णन में भी कवि की शिष्टता, सुथरापन और सांस्कृतिक लगाव निम्नलिखित सांस्कृतिक प्रतीकों में देखते ही बनता है। उदाहरण देखिए –

'' रुप शाकुंतली शील कामायनी
मेधदूती प्रणय कविप्रिया कविप्रिया
भाल पर ओम है कंठ में सतिया
प्रेयसी भी तुम्ही हो तुम्ही ब्याहता
कृष्ण की राधिका राम की हो सिया।'' 15

अतः 'विराट' व्दारा लिखित यह ग़ज़ल सांस्कृतिक बोध की गवाही देती हैं ।

(6) आदर्शवादी जीवन–बोध

'विराट' कोरे आदर्श की बात नही करते। वे युगबोध के रंग में घोलकर ही आदर्शवाद को देखते हैं। उनकी ग़ज़लें जीवन के व्यवहारिक पक्ष को विराट धरातल पर उतराती है। मार्गदर्शक की

Please cite this Article as: *प्रा.शौकतअली अजमुद्दीन सय्यद,चंद्रसेन 'विराट' की ग़ज़लों में व्यक्त जीवन–बोध*: **Indian Streams Research Journal (March ; 2012)**

भूमिका मे एक ग़ज़ल देखिए

'' तू है इंसा तो फिर सलीब उठा
कील ठुकती है उसे ठुकने दे
मेघ को शाप न दे निर्धन्ता
छत टपकती है तो टपकने दे
मौत आ जाये कब किसे मालूम
जिंदगी ! ऑख मत झपकने दे।''116

चाहे कील ठुके या छत टपके अथवा मौत आ जाए, अपने काम में रत रहना चाहिए और कष्ट देनेवाले को क्षमा करते रहना चाहिए। अतः यहॉ व्यवहारिक आदर्शवादी जीवन–बोध की सीख हमें दी है, जिसमें 'विराट' की मार्गदर्शक की भूमिका दिखाई देती है।

निष्कर्श :–

'विराट' की ग़ज़लों मे भाव–बोध का यह रुप जो अनेक कवि रूप कें जीवन–बोध का अनिवार्य अंग है, व्यापक धरातल पर फैला है। 'विराट' जी ने अपनी ग़ज़लों व्दारा मानवीय संवेदना, प्रेम–बोध, नैतिक जीवन–बोध, धार्मिक जीवन–बोध, सांस्कृतिक–बोध, आदर्शवादी जीवन बोध की सीख हमें दी हैं।

संदर्भ :–

1.इस सदी का आदमी, चंद्रसेन 'विराट' दिशा प्रकाशन, दिल्ली (1997) पृ 118
2.हमने कठिण समय देखा है, चंद्रसेन 'विराट' दिशा प्रकाशन, दिल्ली (2002) पृ 55
3.धार के विपरीत, चंद्रसेन 'विराट' चित्रलेखा प्रकाशन, इलाहाबाद (1987) पृ 76
4.हमने कठिण समय देखा है, चंद्रसेन 'विराट' दिशा प्रकाशन, दिल्ली (2002) पृ 64
5.हिंदी उपन्यास और जीवन–मूल्य, डॉ. मोहिनी शर्मा, अमन प्रकाशन कानपुर (1987) पृ 03
6.न्याय कर मेरे समय, चंद्रसेन 'विराट' समांतर प्रकाशन शाजापूर, (1991) पृ 95.
7.हमने कठिण समय देखा है, चंद्रसेन 'विराट' दिशा प्रकाशन, दिल्ली (2002) पृ 41
8.कचनार की टहनी चंद्रसेन 'विराट' चित्रलेखा प्रकाशन इलाहाबाद, (1983) पृ 80.
9.इस सद का आदमी, चंद्रसेन 'विराट' दिशा प्रकाशन, दिल्ली (1997) पृ 58.
10.इस सद का आदमी, चंद्रसेन 'विराट' चित्रलेखा प्रकाशन इलाहाबाद, (1997) पृ 37.
11.हमने कठिण समय देखा है, चंद्रसेन 'विराट' दिशा प्रकाशन, दिल्ली (2002) पृ 63
12.कबीर और तुकाराम के काव्यों में सामाजिकता – डॉ. वि. डी. नुले, अमन प्रकाशन कानपुर (1994) पृ. 171.
13.आस्था के अमलतास, चंद्रसेन 'विराट', इंद्रप्रस्थ प्रकाशन दिल्ली, (1980) पृ 64.
14.धार के विपरीत, चंद्रसेन 'विराट', चित्रलेखा प्रकाशन इलाहाबाद, (1987) पृ 44
15.आस्था के अमलतास, चंद्रसेन 'विराट' इंद्रप्रस्थ प्रकाशन दिल्ली, (1980) पृ 60.
16.परिवर्तन की आहट, चंद्रसेन 'विराट', प्रमोद प्रकाशन नई दिल्ली (1987) पृ 56.

Please cite this Article as: *प्रा.शौकतअली अजमुद्दीन सय्यद, चंद्रसेन 'विराट' की ग़ज़लों में व्यक्त जीवन–बोध*: **Indian Streams Research Journal (March ; 2012)**